रात्रि-क्लास 23-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

मुरली पढ़नी जरूर है। फिर तो ऐसी मुरली वा स्टडी 5000 वर्ष बाद होगी। इसलिए गफ्लत न करनी चाहिए। थोड़े2 अच्छे2 पाईन्ट नोट जरूर करनी चाहिए। फिर रिवाईज़ करना चाहिए। बाप अच्छी2 गुह्य बातें सुनाते हैं ना। वह रखनी चाहिए तो किसको समझाने के काम में भी आवे। यह तो बाप ने समझाया है बुलाते हैं कि हे पतित-पावन आओ, गाईड आओ। किसको कहते हैं? शरीरधारी गाईड तो जिस्मानी यात्राएं कराते हैं। जरूर और कोई रूहानी गाईड मांगते हैं। देहधारी तो गाईड बहुत हैं। मनुष्य बिचारे भक्ति में हैं। ज्ञान तो है नहीं। वह है ज्ञान का सदगति का पहड़ा। यह है भक्ति दुर्गति का पहड़ा। दुर्गति है तो सदगति नहीं। सदगति है तो दुर्गति नहीं। वास्ट डिफरेन्स है। इसलिए पूछा भी जाता है इस समय कलियुग के वासी हो या सतयुग के वासी हो। विजीटिंग रूम में भी लिटरेचर आदि रखना चाहिए। देखना चाहिए अच्छा2 लिटरेचर रखा है जो कोई भी आकर पढ़े। दो टेबुल सजी हुई होनी चाहिए। बुधि तो होती जावेगी। फिर बैन्ट भी रखना पड़ेगा। कोशिश कर 5-7 से इकट्ठी बात करनी नहीं चाहिए। संग से दूसरे की बुधि भी खराब हो जाती है। तुम बच्चों की बुधि में यह तो है चढ़ती कला और उतरती कला। सीढ़ी तुम्हारी बुधि में जरूर रहनी चाहिए। सारी नालेज ही सीढ़ी में है। उतरे और चढ़ते हैं। जीन की कहानी भी है ना। तुम भी जीन हो। उतरना और चढ़ना होता ही रहता है। कब अन्त नहीं होता। तुम्हारे पार्ट ही ऐसे हैं। तुम कहेंगे इस समय हम हैं रूहानी जीन। तुमको बहुत खुशी है। तुम आस्तिक भी बने हो और रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जाना है। यह नालेज देने वाला भी ऊंच ते ऊंच है। पाईन्ट्स तो बहुत दी जाती हैं। अभी तुम जानते हो हम रावण राज्य से बिदाई लेते हैं। जीत तो सर्टन है ना। खाते-पीते, चलते-फिरते सिर्फ जीन वाली सीढ़ी को याद करो। यह खेल बाप ही बैठ समझाते हैं। तो खुशी होती है। अभी हमारा चढ़ाई का पार्ट है। फिर उतराई होगा। शान्तिधाम से टीका में आना पड़ता है। आत्मा जैसे कि जीन है। उतराई और चढ़ाई आत्मा ही करती है ना। यह वन्डर फुल खेल है ना। तुम जानते हो लांग-लांग टाईम एगो यहनई दुनिया थी। राज्य करते थे। फिर राजाई कैसे गवांई फिर कैसे लिया। यह कहानी है ना। नर से नारायण बनने की। यह भी अभी तुम जानते हो। आगे तो झूठी कथाएं सुनते थे। आधा कल्प झूठी गीता आदि सुनते सुनते गिरते आये हैं। अभी सारी दुनियाँ से तुमको वैराग्य है। तो उसी ही अपनी सर्विस में बिज़ी रहना चाहिए। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट।

रात्रिक्लास 24-2-68:-

******************** बापने समझाया है ऐसी प्रैक्टीस करो देखते भी हैं, बात-चित भी करते हैं बुधि बाप तरफ है। पुरानी दुनिया यह खत्म हो जानी है। इस दुनिया को छोड़ कर हमको घर जाना है। यह ख़यालात और कोई की बुधि में नहीं होगा। और कोई यह नहीं समझते हैं। वह तो समझते हैं दुनिया अजर है। तुम तो जानते हो हम अपनी राजाई में जा रहे हैं। राजयोग सीखा रहे हैं। थोड़े ही समय बाद अमरपुरी वा नई दुनिया सतयुग जाये पहूंचेंगे। तुम अभी बदल रहे हो। आसुरी मनुष्य से बदल दैवी मनुष्य बन रहे हो। बाबा मनुष्य से देवता बना रहे हैं। देवताओं में गुण होते हैं। वह भी है मनुष्य। परन्तु उन में दैवी गुण है। यहां आसुरी गुण है। तुम जानते हो आसुरी रावण राज्य फिर न रहेगा। हम दैवीगुण भी धारण कर रहे हैं, बाप की योगबल से पाप भी भस्म कर रहे हैं। करते हो वा नहीं सो तो हरेक अपने को जाने। अपनी गति कोई तो समझ सकते हैं ना। हरेक को अपने को दुर्गति से सदगति में लाना है। अर्थात सतयुग में जाने का पुरुषार्थ करना है। सतयुग है विश्व की बादशाही। एक ही राज्य होता है। यह है विश्व के महाराजन... है ना। दुनिया को यह पता नहीं है। पहले वर्ष से इनकी राजाई शुरू होती है। तुम जानते हो हम यह बन रहे हैं। बाप अपने से भी बच्चों को ऊंच ले जाते हैं। इसलिए बाबा नमस्ते करते हैं। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान सितारे। तुम लक्की हो। समझते हो बाबा नमस्ते बिलकुल राईट अर्थ से करते हैं। बाप आपको बहुत सुखधनी देते हैं। यहां तो सुख है

है नहीं। सब गालियां देते रहते हैं। तुम ने अभी बाप को जाना है तो उनको कब गालियां दे न सकेंगे। यह गालियां भी वन्डरफुल है। तुम्हारी राजाई भी वन्डफर फुल है। तुम्हारी आत्मा भी वन्डरफुल है। इतना सारा रचता और रचना की नालेज तुम्हारी बुधि में है। तुमको आप समान बनाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। है कल्प पहले वाली तकदीर। पुरुषार्थ तो बाप कराते रहते हैं। यह नहीं कह सकते हैं कौन आठ रत्न बनेंगे। यह खुद भी नही बता सकते हैं। बताने का पार्ट ही नहीं है। आगे चल कर तुम अपने पार्ट को जान जावेंगे। जैसा जो पुरुषार्थ करेंगे अपना भाग्य बनावेंगे। बाप है रास्ता बताने वाला। जितना जो उस पर चलेंगे। इनको तो सूक्ष्मवतन में देखते ही हैं। इन्हीं का तो पक्का ही है। प्रजापिता ब्रहमा साथ में बैठा है ना। ब्रहमा से विष्णु बनना सेकण्ड का काम है। विष्णु से ब्रहमा बनने में 5000 वर्ष लगते हैं। बुधि से लगता है बात बराबर ठीक है। त्रिमूर्ति बनाते हैं ब्रहमा, विष्णु शंकर है। परन्तु यह कोई समझते नहीं होंगे। यह अभी तुम बच्चे ही समझते हो। तुम कितना पदमभाग्यशाली बच्चे हो। पैर में पदम देवताओं को दिखाते हैं ना। पदमपति नाम भी वाला है। पदमपति बनते भी गरीब साधारण ही हैं। करोड़पति तो कोई आते नहीं। 5-7 लाख वाले को साधारण कहेंगे। इस समय 20-40हज़ार तो क्या है। पदमपति कोई है तो एक जन्म के लिए। थोड़ा सा ज्ञान लेंगे। सब कुछ स्वाहा तो कर न सके। सब कुछ स्वाहा किया जो पहले आये। फट से सब का पैसा काम में लग गया। गरीबों को तो लग जाता है ना। शाहुकारों को कहा जाता है सर्विस करो। ईश्वरीय सर्विस करनी है तो सेन्टर खोलो। मेहनत भी करो। दैवी गुण भी धारण करो। बाप अपने को गरीब निवाज़ कहलाते हैं। भारत सब से गरीब है ना। भारत की ही सब से जास्ती आदमसुमारी है। क्योंकि शुरु में आये हैं ना। जो गोल्डेन एज में थे वही आसरन एज में आ गये हैं। एकदम गरीब बन पड़ते हैं। खर्चा कर सब खत्म कर दिया है। बाप समझाते हैं अभी तुम फिर से देवता बन रहे हो। निराकारी गाड तो एक ही है। बलिहारी है एक की। दूसरों को समझाने लिए तुम कितनी मेहनत करते हो। चित्र बनाते रहते हो। बनते जावेंगे। ट्रान्सलाईट के भी बहुत बड़े2 चित्र बन जावेंगे। एक दिन बन जावेंगे, बहुत अच्छी रीत समझते जावेंगे। बुद्धा की टिक2तो चलती रहती है। इस ड्रामा के टिक2 को तुम ही जानते हो। सारी दुनिया की एक्ट हु बहू कल्प पहले मिशल रिपीट हो रही है। सेकण्ड व सेकण्ड चलती रहती है। बाप यह सब बातें समझाते फिर भी कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करो। कोई पानी से कोई आग से पार हो जाते हैं फायदा क्या। आयु कोई बड़ी होती नहीं। यह तो बुधि में है आठ दस वर्ष में यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। हमको तो याद करना है शान्तिधाम सुखधाम को। मनमनाभव का भी अर्थ यही है। शान्तिधाम सुखधाम को याद करे तो जस खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी होती है धन में। तुमको गुप्त धन मिलता है। अभी दुःख का समय बहुत थोड़ा है। यह ज्ञान गुप्त अन्दर का है जिससे खुशी होता है। बाप द्वारा सुख का ही वर्सा मिलता है। रावण के राज्य में है 5 विकार। उस में ही विकार। विकारी-निर्विकारी, पतित पावन का यह खेल है। बुधि भी कहती है पावन बनते हैं बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। सब शान्तिधाम और सुखधाम हो जाती है। तो बाप कहते हैं ऐसा कर्म न करो जिससे पाप बन जाये। अच्छा गुडनाईट। बाप कहते हैं बाकी समय अभी थोड़ा है। बहुत बई थोड़ी रही। बाकी बच्चे ही कितने हैं। कोई बच्चा पैदा कर लेंगे लेकिन वह तो वर्सा बनेगा नहीं। सब मर जावेंगे। यब के सब मिट्टी में मिल जानी है। सब दब जावेंगे फिर नई दुनिया में सब खानियां भरतू हो जावेंगी। अभी तो देखो अनाज़ ही नहीं मिलता है। भल कहते हैं बहुत अनाज़ होगा यह होगा। अच्छा भावी ऐसे है फिर जोर से बरसात पड़ती है तो खेल ही खलास। इसलिए कोई बात में विश्वास नहीं रखसकते। ओम।